सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान सदा स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा आत्मा हूँ।

- बाबा के महावाक्य हैं कि ब्राह्मणों के लिए स्मृति ही जीवन है और विस्मृति ही मृत्यु। यदि हमें स्मृति है कि हम कौन हैं, हमारा कर्त्तव्य क्या है तो जैसे हम 'जीवित' हैं और यदि हम विस्मृत हैं अपनी महानताओं से तो जैसे हम 'मृत' हैं। इसीलिए ब्रह्मा बाबा ने आदि से ही सदा स्मृति स्वरूप रहने का पुरुषार्थ किया और पुरुषार्थ करते-करते इन स्मृतियों के स्वरूप बन गए। ऐसे ही फॉलो फादर।

योगाभ्यास:- इस सप्ताह हम प्रतिदिन एक स्मृति लेकर सारे दिन उसका अभ्यास करेंगे।

सोमवार: स्मृति - मैं इस धरा पर शांति का अवतार हूँ।

अभ्यास - मैं शांति का अवतार सारे संसार में निरंतर शांति की तरंगे फैला रहा हूँ।

मंगलवार: स्मृति - मैं विश्व नाटक का हीरो एक्टर हूँ।

अभ्यास - सारे विश्व की आत्मायें मुझे देख रही हैं और संकल्प, बोल और कर्म में फॉलो कर रही हैं।

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान सदा एवररेडी हूँ।

- जैसे ब्रह्मा बाबा सदा एवररेडी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न रहें, ऐसे फॉलो फादर। सर्व शक्तियां ऐसे एवररेडी का हर समय ऑर्डर मानने वाली सिपाही व साथी रहती हैं। एवररेडी का अर्थ ही है सर्व शस्त्रधारी। यदि कोई भी शक्ति की कमी व कमजोरी होगी तो अंत में माया उसी कमजोरी की विधि द्वारा वार करेगी।

योगाभ्यास - ऑर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रूहानी वा दिव्य बनाओ जिसमें देह अभिमान का जरा भी अंशमात्र न हो, तो ऐसा बनने में एक सेकण्ड के बजाय दो सेकण्ड भी न लगे, तब कहेंगे एवररेडी।

- हर कर्मेन्द्रिय को जब चाहें, जहां चाहें वहाँ लगा लें और जब न लगाना हो तो कंट्रोल कर लें। अपनी बुद्धि को जहां चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय उस स्थिति में स्थित कर लें,

प्रथम सप्ताह

बुधवार: स्मृति - मैं पवित्रता का सूर्य हूँ।

अभ्यास - मैं अंतरिक्ष में स्थित होकर सारे संसार से अपवित्रता के अंधकार को दूर कर रहा हूँ।

गुरुवार: स्मृति - भगवान मेरा दोस्त है।

अभ्यास - अपने खुदा दोस्त को ऊपर से नीचे बुलाकर उसके साथ और सहयोग का अनुभव करें।

शुक्रवार: स्मृति - अब वापस घर जाना है।

अभ्यास - इसलिए मुझे देह और दुनिया में उलझना नहीं है। आखिर क्या जाएगा मेरे साथ...?

शनिवार: स्मृति - मैं विश्व का आधारमूर्त और उद्धारमूर्त आत्मा हूँ।

अभ्यास - सारा कल्पवृक्ष मेरी वृत्ति, दृष्टि और कृति से प्रभावित होता है।

रविवार: स्मृति - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।

अभ्यास - सर्वशक्तिवान भगवान ने अपनी समस्त शक्तियां वरदान में मुझे दे दी हैं।

दूसरा सप्ताह

तब कहेंगे एवररेडी।

- स्मृति का स्विच ऑन किया और शांति के साथ-साथ अति शांत और अति रमणीक स्थिति का अनुभव हो। ऐसी रूहानी लिफ्ट की गिफ्ट प्राप्त करना अर्थात् बाप समान एवररेडी बनना।

धारणा - सदा एवररेडी

- अपने को सदैव ऐसा एवररेडी रखना है जो कभी भी अंत का समय आ जाएं तो इंतजार को खत्म करके इंतजाम रखना। सिर्फ सर्विस में एवररेडी नहीं लेकिन पुरुषार्थ में भी एवररेडी। इसके लिए संकल्पों को एक सेकण्ड में बंद करना है। जैसे मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है, ऐसे आपका यह संकल्पों रूपी बिस्तरा तैयार रहना चाहिए।

चिंतन - क्या मैं स्वयं को एवररेडी समझता करेगा। कभी भी नहीं सोचो कि कोई हमें आगे बढ़ाये। योग्य बनो, अधिकारी बनो और स्वयं के बल पर आगे बढ़ो। किसी के आधार से आगे बढ़ना, किसी के सहारे पर चलना तुम्हारी शोभा नहीं। तुम्हें तो जग का आधार बनना है, तुम्हें तो जग को सहारा देना है। तुम कुछ भी मांग कर नहीं, अधिकार से ही प्राप्त करो। तुमने ईश्वर के एक इशारे पर स्वयं को स्वाह कर दिया, अब ईश्वर तुम्हें इशारे दे रहा है। अब वह तुम्हारे इशारे पर तुम्हें सब तरह से मदद करने को तैयार है, सहस्त्र भुजाओं सहित। अब उसके अंतिम इशारों को जीवन में आत्मसात् कर लो, तो शीघ्र ही समस्त विश्व तुम्हारे इशारों की इंतजार करेगा और तुम्हारे इशारों पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहेगा।

इसलिए हे भगवान के वत्सों, तुमने सब कुछ जान लिया, तुमने भगवान को भी देख लिया, तुमने अपने नाते भी उनसे जोड़ लिए, भाग्य निर्माण की विधि भी तुमने जान ली, अत: सब कुछ पाने के लिए बीसों नखुनों का जोर लगा

धारणा - निरंतर अभ्यास और अटेंशन

- करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरि आवत-जात ही, सील पर पड़त निशान।

- 'बार-बार अभ्यास व्यक्ति को निपूण बना देता है' इसलिए निरंतर स्मृति स्वरूप रहने का अभ्यास करें।

चिंतन - बाबा ने हमें क्या-क्या स्मृतियां दिलायी हैं? कम से कम 108 स्मृतियों की माला बनायें।

- स्मृति स्वरूप बनने और नष्टोमोहा स्थिति का आपस में क्या सम्बन्ध है?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! सारा सृष्टि चक्र स्मृति और विस्मृति का खेल है। कहा जाता है कि जैसी स्मृति वैसी स्थिति। जब हमें स्मृति है कि हम सब आत्मायें हैं तो संसार स्वर्ग है और जब हम आत्म-विस्मृत होते हैं तो संसार नर्क बन जाता है। हम ब्राह्मणों का अंतिम लक्ष्य है ही नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। जब हम स्मृतिस्वरूप होंगे तभी नष्टोमोहा बनेंगे और सम्मानपूर्वक पास विद ऑनर होकर अपने घर जायेंगे।

हूँ?

- एवररेडी आत्मा की निशानी क्या होगी?

- एवररेडी बनने के लिए मुझे क्या करना होगा?

- मैं कब तक स्वयं को एवररेडी बना लूंगा?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! प्यारे बाबा कहते हैं कि मुक्ति-जीवनमुक्ति का गेट खोलने की जवाबदारी बाप के साथ-साथ आप एवररेडी ग्रुप की है। यह विनाश सर्व आत्माओं की सर्व कामनायें पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। इसलिए अब ऐसा संकल्प इमर्ज करो कि सर्व दु:खी, अशांत आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शांत और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। इस संकल्प से विनाश ज्वाला भड़केगी और सर्व का कल्याण होगा। इसलिए अब बेहद की उपराम वृत्ति वा वैरागय वृत्ति को धारण करने में एवररेडी बनो।

जीवन का बलिदान करने..... पृष्ठ 3 का शेष

तुम्हारा प्रत्येक संकल्प, तुम्हारा प्रत्येक बोल अनेक रूहों में रूहानियत भरने वाला होगा।

जो कुछ भी तुम्हारे इस जीवन में आता है, उसे अपने ही बोये बीज का फल जानकर सहर्ष स्वीकार कर लो। मन को कभी भी भारी न होने दो। ये भी न सोचो कि कोई हमें पूछता नहीं। भगवान ने तुम्हें पूछा है, उसकी मीठी नजर तुम पर है, तुम अकेले हो कहां? जीवन-यात्रा में उतार-चढ़ाव तो सभी के आते हैं, ऐसा देखकर अपने मनोबल को तथा अपनी उमंगों को ढीला न करो। उतरते-चढ़ते हुए अधिक शक्तिशाली व अनुभवी बनते हुए एक दिन तुम सर्वोच्च शिखर पर चढ़ ही जाओगे।

अपनी रूहानी चमक को इतना बढ़ा दो कि तुम्हारी दिव्यता को कोई अस्वीकार न कर सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, बस तुम वही करो जिसके लिए तुमने जीवन का बलिदान किया है। वह न करो जो तुम्हारा पथ नहीं है। तब तुम्हें संसार पूजेगा, तब तुम्हें जग स्वीकार

दो। ये घड़ियां लौटेंगी नहीं, प्रभु मिलन के ये दिन याद आया करेंगे, जीवन के ये सुखद क्षण अतीत की परछाइयों में लोप हो जायेंगे। इसलिए मन में जो भी पाने की अभिलाषा है, उसे पूर्ण कर लो। याद रखो - ''मन की सच्ची इच्छा अवश्य पूर्ण होंगी।''

दु:ख को.... पृष्ठ 2 का शेष

छिद्र करने वाले असामाजिक तत्व।

सुख-सुविधाओं के साधन ने मनुष्य के पास से सत्य को लूट लिया। इसलिए आज का मानव दु:खी, कायर और पालायनवादी बन गया है। हमें एक बात अपने शयनकक्ष की दीवार पर लिख कर रख देनी चाहिए जिसे कि हम आसानी से पढ़ सके - मैं व्याधि-उपाधि, आंधी-तूफान, दंगा-प्रपंच के क्षणों में और विश्वासघात तथा विनाश के पलों में पराजित हुए बिना स्वस्थ मानव जैसी अवस्था बनाएं रखुंगा, क्योंकि मैंने दु:ख को दु:खी करने के लिए जन्म लिया है।

गोवहाटी। असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगई को 'आत्म-स्मृति' का तिलक देते हुए ब्र.कु.मौसमी बहन एवं 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.पूनम बहन।

अम्बाजोगई। विधायक पी.जे.सेठ को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन।

बदलापुर। पी.जी.कॉलेज के प्रिंसीपल अखिलेश सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.आरती बहन।

बेतिया। पश्चिमी चम्पारण के जिलाधिकारी श्रीधर को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.अंजना बहन।

फरीदाबाद। संजीव मान को पवित्रता का प्रतीक 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.हेमलता बहन।

सुनाम। पंजाब के वित मंत्री परमिंद्र ढीडसा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.मीरा बहन।